6. TECHNIQUE OF DRAWING & PAINTING - COLOR THEORY

PART - I

हम सब ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग शब्द से परिचित हैं हिन्दी में यदि इसका अनुवाद करें तो इसे सामान्य भाषा में कला एवं चित्रकला कहा जा सकता है। ड्राइंग का सही अर्थ है - रेखांकन। वास्तव में यह शब्द युग्म एक ही है या यूं कहा जा सकता है कि एक ही क्रिया के दो हिस्से हैं।

हम सब कोई चित्र बनाते हैं तो पहले हम रेखाओं द्वारा उसकी आकृति खींचते हैं यही रेखांकन है। दूसरे कदम में हम उन रेखाओं से बनी आकृति को रंगों से सजाते हैं यही चित्रकारी है।

रेखांकन और चित्रकारी का अध्ययन केवल रेखा खींचकर आकृति बनाने और उसमें रंग भरने तक सीमित नहीं है। वास्तव में इसके अन्तर्गत हम अगर इन दोनों को एक शब्द में कला कहें तो कला की प्रशंसा Art Appreciation कला का इतिहास Art History, रेखांकन Design चित्र का मुद्रण Print Making एवं अन्य स्टूडियो के कार्यों का अध्ययन भी इसमें शामिल है।

स्टूडियो की यांत्रिक व्यवस्था उसमें काम आने वाली विभिन्न चीजें (उदाहरणार्थ - प्रकाश व्यवस्था, रंग, ब्रश, कैनवास आदि) एवं उनके प्रयोग की तकनीक का अध्ययन का ही एक अंग है।

सही तरीके से कला का अध्ययन करने वाले विद्यार्थी को अपना अधिकतम समय स्टूडियो में ही देना चाहिये। इस क्षेत्र के अलग - अलग एवं माध्यमों के विषय में जितनी व्यवहारिक जानकारी विद्यार्थी को होगी, उतना ही उसे लाभ होगा।

कला तभी अपनी पूर्णता को प्राप्त होती है जब उसकी दर्शकों द्वारा पर्याप्त प्रशंसा हो और इस कार्य में स्टूडियो ही महती भूमिका निभाते हैं। समकालीन में नये आयाम क्या क्या जोड़े जा रहे हैं इन सबका ज्ञान स्टूडियो में समय - समय पर आयोजित चित्रकला प्रदर्शित प्रदर्शनियों से ही हो सकता है।

जहाँ तक कला के विद्यार्थी के कला के अध्ययन को प्रारम्भ करने का सवाल है तो सर्वप्रथम उसे स्वयं सौन्दर्य, चाहे वो मानवीय हो प्राकृतिक हो या मानव निर्मित पदार्थों का वस्तुओं का हो, उनकी कलात्मकता को पहचानने की प्रवृति विकसित करनी होगी।

चित्रकला के निम्नलिखित पहलुओं को दृष्टि में रखा जाता है —
आकृतियाँ — हम जानते हैं कि हर वस्तु की एक आकृति होती है। उदाहरणार्थ हम मानव को ही लें तो हम आसानी से उसकी आकृति की कल्पना कर सकते हैं। बिना आकृति के कोई वस्तु नहीं हो सकती।

आकृति ही आकार बनाती है। निराकार का कोई स्वरूप नहीं होता। कला के विद्यार्थी को सर्वप्रथम इस धारणा को समझना होगा कि प्रत्येक दृश्य का एक आकार होता है और हम यदि कोई कल्पना भी करते हैं तो उस कल्पना या काल्पनिक वस्तु का भी एक आकार होता है।

मुद्रायें — कला के सन्दर्भ में मुद्रा का अर्थ है — हाथों, पावों, मुख, नेत्रों आदि की मुद्रा भारतीय चित्रकला में मुद्राओं का आदर्श रूप मिलता है। अधिकांशतः नृत्य ~~मुद्राओं~~ मुद्रायें ही भारतीय कला में अंकित हैं। मुद्राओं से ही आकृति के भावों को दर्शाया गया है - राजपूत, मुगल एवं अजंता शैली की नृत्य मुद्रायें विश्व प्रसिद्ध हैं। ध्यान, उपदेश, क्षमा, भिक्षा, त्याग, वीरता, क्रोध, विरह, प्रतीक्षा, कांटा निकालने की पीड़ा, एकाकीपन आदि भावों को मुद्राओं से ही दर्शाया गया है।

आलंकारिकता — अलंकरण से चित्र सवंरता है और वह आकर्षक सिद्ध होता है। अजंता की गुफाओं में प्रत्येक चित्र में अलंकरण का बड़ी कुशलता से प्रयोग किया गया है।

रेखा — रेखा दो बिन्दुओं या सीमाओं के बीच की दूरी होती है जो बहुत सूक्ष्म होती है जो गति की दिशा को निर्देश करती है। लेकिन कला पक्ष के अन्तर्गत रेखा का प्रतिकात्मक महत्व है और वह रूप की अभिव्यक्ति व प्रभाव को अंकित करती है। भारतीय चित्रकला रेखा प्रधान है रेखाओं के बिना किसी भी कलाकृति की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

रूप या आकृति — रूप का अर्थ है - आकृति हमें क्या समझा रही है? इसे ही आकृति का रूप कहा जाता है। दृश्य कलाओं में रूप वह है जो सभी ओर से रेखाओं अथवा अन्य रूपों से घिरा हुआ या सीमित हो। 'रूप' एक धारणा है जो ~~का~~ पारस्परिक सम्बन्ध के नियम पर आश्रित रहती है। रूप के आयामों को तकनिक से थोड़ा-सा परिवर्तित करके कलाकार कलाकृति का रूप ही बदल देता है। आयामों के तकनीक से परिवर्तन से हँसता चेहरा रोता

है ~~ऐसा~~ महसूस होने लगता है और रोता चेहरा हँसता है।

रंग (वर्ण) — किसी भी कलाकृति की शोभा उसके रंग ही होते है - (i) प्राथमिक रंग — प्राथमिक रंग वह होते है जो किसी भी रंग के मिश्रण से नहीं बनते। जो प्राकृतिक से बने है उसे (Primary Colour) कहते है जैसे लाल, नीला, पीला और हरा। (ii) द्वितीयक रंग — वे रंग जो दो रंगो को मिलाकर एक नया रंग बनाया जा सके उसे (Secondary Colour) कहते है।

प्रकाश की मात्रा पीले रंग में सबसे अधिक और नीले रंग में सबसे कम होती हैं। रंगो के उष्ण तथा शीतल प्रभाव भी माने जाते हैं। पीले तथा बैंगनी न उष्ण है न शीतल। लाल तथा नारंगी ~~उ~~ उष्ण और हरे तथा नीले शीतल है।

मान (value) — रंगत के हल्के और गहरे पन को मान कहते है जब रंग में सफेद रंग मिलते है तो मान में वृद्धि होती है और काला रंग मिलाते है तो मान में कमी होती है।

पोत - (Texture) — किसी भी वस्तु के धरातलीय गुण के पोत कहते है जिस प्रकार कपडे की बुनावट मोटी या बारीक होने से उसके धरातलीय प्रभाव में अन्तर आ जाता है ~~इ~~ उसी प्रकार चित्र मूर्ति या भवन के धरातलों के चिकने या खुरदरे होने से उनके धरातलीय प्रभाव में अन्तर आ जाता है। इसी को पोत ~~कहते~~ कहा जाता है।

अन्तराल (Space) — " चित्रकार का चित्र सृजन में चित्र का वह आधार व ~~क्षेत्र~~ क्षेत्र जिसपर कलाकार सृजन कार्य करता है वह अन्तराल कहलाता है "।

दृश्यकला के इस तत्व का महत्व इसी से स्पष्ट है कि जिन कृतियों में इस तत्व का कुशलता से प्रयोग किया जाता है वे दूर से ही ध्यान आकर्षित कर लेती है।